

# प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर प्रभाव

## सारांश

चूँकि शिक्षा जीवन के उद्देश्य तथा जीवन शैली की अनुगामिनी होती है। अतः आवश्यकता इस बात है कि ऐसे सिद्धान्तों को अनुगमन किया जाये जिससे उच्च जीवन दर्शन की स्थापना हो सके। शोधार्थिनी ने अपने शोध में बांदा जिले के छः ब्लकों के उन तमाम विद्यालयों में जाकर वहाँ के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता उनकी शिक्षण अभिक्षमता के विषय में जानकारी हासिल करते हुये पाया कि प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नहीं डालती है। अध्ययन में पाया गया कि आज पूर्व की अपेक्षा व्यक्ति की अपनी कार्यकुशलता भी महत्वपूर्ण है।

**मुख्य शब्द** : प्राथमिक विद्यालय, कार्यरत अध्यापक, अभिक्षमता ।

## प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाज दोनों सापेक्ष है। एक दूसरे के पूरक है और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। अतः व्यक्ति की शिक्षा इस प्रकार हो कि वह अपने गुणों का उपयोग अपने विकास तथा समाजोत्थान के लिये करे। करने की यह प्रक्रिया शिक्षण आधारित है। स्व शिक्षण का आधार आवश्यकता तथा अनुकरण है। सामान्य शिक्षण का आधार शिखक है। वह कतिपय कौशल तक नीक तथा प्रविधि के द्वारा सरलता से बालक में वांछित व्यवहार परिवर्तन करता है। शिक्षक बालक की जन्मजात विशेषताओं रुचियों प्रवृत्तियों में वातावरण निर्माण तथा अनुभव तथा कौशल से परिवर्तन करता है। उसकी प्रकृति मानसिक स्तर, रुचि, बौद्धिक योग्यता, व्यक्ति निष्पत्ति आदि में विकास करता है।

शिक्षा अनादिकाल से चली आ रही मानव व्यवहार को परिमार्जित करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा मनुष्य का सामाजिक मान्यताओं के अनुसार विकसित करने में विशेष योग दिया है। वर्तमान समय में भारत की प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी व्यवस्थाओं में से एक है। जहाँ हमारी सरकार समय समय पर शिक्षक शिक्षिकाओं की नियुक्ति करती है और सर्वशिक्षा अभियान कार्यक्रम का संचालन करती है, ताकि बच्चा बच्चा शिक्षित हो सके। चूँकि बच्चा देश का कर्जधार माना जाता है, अतः हर एक शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है कि पूर्व मनोभाव से शिक्षण कार्य करे। कहा भी गया है कि "राष्ट्र का निर्माता शिक्षक ही है।"

आज के इस भौतिकवादी युग में शिक्षा का स्तर दिनो-बदन गिरता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण छात्र, अभिभावक व शिक्षक है। शिक्षक का कार्य मानव निर्माण कार्य है। किसी भी भौतिक निर्माण कार्य से ही कही अधिक जटिल है। अतः इसके प्रशिक्षण के लिये प्रशिक्षणार्थी कार्यक्रमों से अधिक तकनीकी ज्ञान और कौशलों के विकास की आवश्यकता है परन्तु खेद है कि जहाँ भवनो, पुलों, बंधों के लिये प्रशिक्षण देने वालों को 4/5 वर्ष तक प्रशिक्षण देना पड़ता है। वही हमारा शिक्षक डेढ़ से दो साल में प्रशिक्षण हो जाता है और हमारे मुक्त विश्वविद्यालय इस समय सीमा में भी मुक्ति दिलाने में कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। अतः हमारा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम निरन्तर सन्दर्भहीन, अर्थहीन होता जा रहा है। हम समय की मांग के अनुरूप अपने कार्यक्रमों में परिवर्तन लाये। समय पर कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित किया जाये तथा उनकी अभियोग्यता में परिवर्तन हो और वे अपने व्यवसाय के प्रति सजग होकर कार्य कर सकें।

## अध्ययन का उद्देश्य

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना है।



## उर्मिला सिंह

शोध छात्रा,  
शिक्षाशास्त्र विभाग,  
महात्मा गाँधी चित्रकूट  
ग्रामोदय विश्वविद्यालय,  
चित्रकूट, सतना, म०प्र०

### पारिभाषिक शब्दावली प्राथमिक विद्यालय

वह विद्यालय जिसमें छात्र/छात्राओं को बेसिक शिक्षा दी जाती है।

### कार्यरत अध्यापक

वे पुरुष एवं महिलायें जो अर्थोपार्जन के लिये सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्यापन का कार्य करते हैं तथा नियम व कानून का पालन करते हैं।

### शैक्षिक योग्यता

शिक्षक की अपने अध्ययनकाल के दौरान जो डिग्रियाँ हासिल की है।

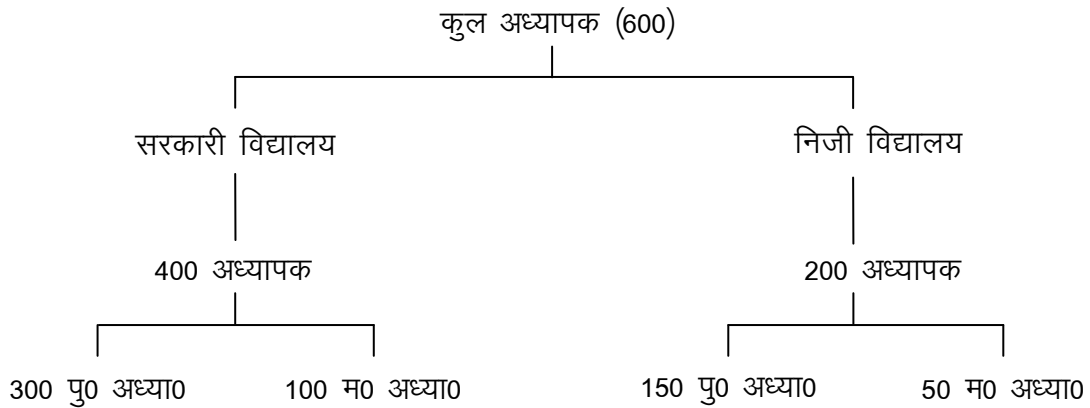
### अभिक्षमता

अभिक्षमता किसी एक क्षेत्र या समूह में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता अथवा विशिष्ट क्षमता है।

### परिकल्पना

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सर्वप्रथम शोधार्थिनी द्वारा बाँदा जिले के छः ब्लॉकों के छः सौ अध्यापकों का चयन किया गया है, जिसमें कि 400 सरकारी एवं 200 अर्द्धसरकारी विद्यालय के अध्यापक लिये गये हैं। सरकारी विद्यालय के 300 पुरुष एवं 100 महिला अध्यापक हैं, तिन्दवारी ब्लॉक के 50 पुरुष, 16 महिला, बबेरु ब्लॉक के 50 पुरुष, 17 महिला, कमासिन ब्लॉक के 50 पुरुष, 17 महिला, बिसण्डा ब्लॉक के 50 पुरुष, 16 महिला, नरैनी ब्लॉक के 50 पुरुष, 17 महिला, बड़ोखर ब्लॉक के 50 पुरुष, 17 महिला अध्यापकों का चयन किया गया।



### शैक्षिक योग्यता

सभी अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता के लिए उनके हाईस्कूल से लेकर उनकी अन्तिम डिग्री के कुल अंकों का अलग-अलग प्रतिशत निकालकर कुल डिग्रियों की संख्या का भाग देकर, जितना प्रतिशत आया, उस प्रतिशत को शैक्षिक योग्यता का आधार माना गया है।

### शिक्षण अभिक्षमता

अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का मापन करने के लिए शोधार्थिनी सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पहुँच कर अध्यापकों से प्रश्नावली (T.A.T.B.-SS) जो Dr. R.P. Singh एवं S. N. Sharma द्वारा निर्मित है,

भरवाया गया आर मूल्यांकन के लिए माने गये पैमाने के आधार पर मूल्यांकन किया गया।

### सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकीय प्रविधियों के अन्तर्गत, मध्यमान, मानक विचलन एवं T test का उपयोग किया गया है। शोधार्थिनी के द्वारा एकत्र किये गये आँकड़ों के उच्च शैक्षिक गुणों के 27 प्रतिशत के अध्यापकों एवं निम्न शैक्षिक गुणों के वाले 27 प्रतिशत अध्यापकों को लिया गया है।

T. A. T. B.

उच्च- 27%

600 = 162

### सारणी-1

वर्गान्तर	आवृत्ति (f)	मध्यक (M)	विचलन (d)	f x d		f x d <sup>2</sup>
40 - 48	1	44	-5	-5		25
48 - 56	5	52	-4	-20		80
56 - 64	14	60	-3	-42	-159	126
64 - 72	32	68	-2	-64		128
72 - 80	28	76	-1	-28		28
80 - 88	33	84	0	0		0
88 - 96	20	92	+1	+20		20
96 - 104	15	100	+2	+30	-93	60
104 - 114	13	108	+3	+39		112
114 - 122	1	118	+4	+4		16
	N = 162			Σfd = -66		Σfd <sup>2</sup> = 600

AM = 84,  
N=162,  
C S =9

$$M = AM = \frac{\sum fd}{N} \times C.I.$$

$$= 84 + \left(\frac{-66}{162}\right) \times 9$$

$$= 84 - 3.67$$

$$M = 80.33$$

$$S.D. = C.I. \times \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

$$= 9 \times \sqrt{\frac{600}{162} - \left(\frac{-66}{122}\right)^2}$$

$$= 9 \times \sqrt{3.70 - 0.12}$$

$$= 9 \times 1.88$$

$$S.D. = 16.92$$

निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक  
(27% of 600 = 162)

सारणी-2

वर्गान्तर	आवृत्ति (f)	मध्यॉक (M)	विचलन (d)	f x d	f x d <sup>2</sup>
50 - 58	5	54	-3	-15	45
58 - 66	25	62	-2	-30	100
66 - 74	38	70	-1	-38	38
74 - 82	41	78	0	0	0
82 - 90	26	86	+1	+26	26
90 - 98	12	94	+2	+24	48
98 - 106	10	102	+3	+30	90
106 - 114	4	110	+4	+16	64
114 - 122	1	118	+5	+5	25
	N = 162			$\sum fd = +28$	$\sum fd^2 = 436$

AM = 78,

C.I.=9

N=162,

$$M = AM + \frac{\sum fd}{N} \times C.I.$$

$$= 78 + \left(\frac{28}{162}\right) \times 9$$

$$= 78 + 1.56$$

$$M = 79.56$$

$$= 9 \times \sqrt{\frac{436}{162} - \left(\frac{+28}{162}\right)^2}$$

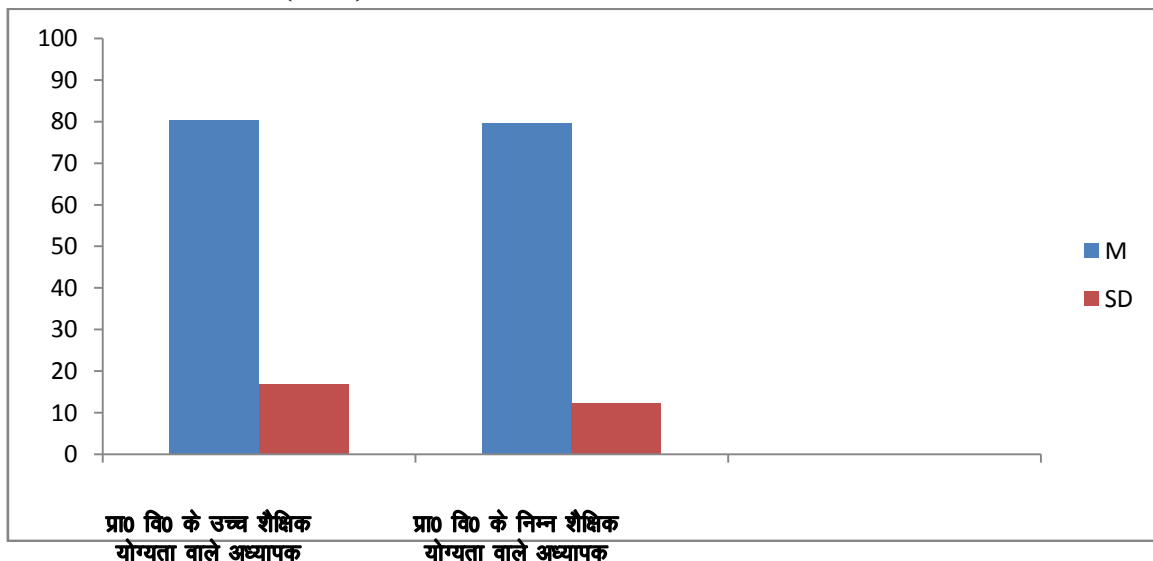
$$= 9 \times \sqrt{2.69 - 0.029}$$

$$= 9 \times \sqrt{2.661}$$

$$= 8 \times 1.63$$

$$= S. D.$$

$$S.D. = C.I. \times \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$



सारणी से स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 8.33 है तथा मानक विचलन 16.92 है। निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 79.56 है तथा मानक विचलन 14.67 है। T test लगाने पर दोनों माध्यों का उच्च शैक्षिक योग्यता वाले

C.R.-0.44 आया है, जो कि 322 df पर 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. ('t') का मान 1.97 है तथा 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. ('t') का मान 2.59 से बहुत कम है।

सारणी-3

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	C.R.
उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक	162	80.33	16.92	0.44
निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक	162	79.56	14.67	

$$\sigma D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \sqrt{\frac{(16.92)^2}{162} + \frac{(14.67)^2}{162}}$$

$$= \sqrt{1.77 + 1.33}$$

$$= \sqrt{3.1}$$

$$\sigma D = 9.76$$

$$C.R. = \frac{M_1 - M_2}{\sigma D} = \frac{79.56 - 80.33}{1.76}$$

$$= \frac{0.77}{1.76}$$

$$C.R. = 0.44$$

$$df = N_1 + N_2 - 2$$

$$df = 162 + 162 - 2$$

$$= 322$$

यहाँ पर 322 d.f. पर 't' का सारणी मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक 't' का मान = 1.97 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक 't' का मान = 2.59

जो कि सार्थक नहीं हैं।

अतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और यही मानना पड़ेगा कि दोनों समूहों के शिक्षण अभिक्षमता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) की शैक्षिक योग्यता का उनके शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

#### निष्कर्ष

आज का युग वैज्ञानिक युग है हमें उन सभी चुनौतियों के लिये तैयार रहना है जो हमें परिवर्तन के फलस्वरूप मिलती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी नित्य नवीन संशोधन परिवर्तन तथा शोध होते रहते हैं। चूँकि अभिक्षमता व्यक्ति की वह मानसिक योग्यता है जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में उसकी सफलता की सम्भावना का संकेत करती है। यह शिक्षक की वह अन्तर्निहित शक्ति है जो

उसे किसी कार्य के प्रति उन्मुख करती है। अतः अध्ययन में पाया गया कि शैक्षिक योग्यता चाहे वह निम्न स्तर पर हो या उच्च स्तर पर इसका प्रभाव शिक्षण अभिक्षमता पर नहीं पड़ता है।

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय शिक्षा का विकास, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद- लेखक- डॉ० मालती सारस्वत, प्रो० एस० एल० गौतम
2. उभरते भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, लेखक- डॉ० रामशकल पाण्डेय।
3. वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, लेखक- नम्रता वशिष्ठ, रामप्रकाश शर्मा
4. प्रगतिशील/उदीयमान भारत में शिक्षा राधा प्रकाशन मंदिर आगरा, लेखिका- श्रीमती राजकुमारी शर्मा
5. अधिगम का विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा-2, लेखक- डॉ० रामपाल सिंह, डॉ० राधावल्लभ उपाध्याय
6. मनोविज्ञान समाज शास्त्र में शिक्षा में शोध विधियाँ, प्रकाशन- मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली - लेखक- अरुण कुमार सिंह
7. वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा०लि० आगरा, लेखक- श्रीमती आर०के० शर्मा, प्रो० श्रीकृष्ण दुबे, श्रीमती अनीता बरौलिया
8. विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-2, लेखक- गुरसदन दास त्यागी।
9. भारतीय शिक्षा और उनकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-2, लेखक-पी०डी०पाठक
10. भारतीय शिक्षा में समसामयिक प्रकरण, शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद, लेखक - प्रो०एस०पी०गुप्ता, डॉ० अल्का गुप्ता
11. शिक्षा की दार्पणिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी जयपुर, लेखक डा० लक्ष्मी के ओड
12. शिक्षा के दार्पणिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ रस्तोगी पब्लिकेशन, लेखक- रमन बिहारी लाल
13. समृद्ध शिक्षा अभियान- राज्य परियोजना निदेशक, लखनऊ, लेखक- जे एस दीपक, आई०ए०एस०
14. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, लेखक- रामशकल पाण्डेय